हिन्दी प्रारूप प्रश्न पत्र – 2

निर्धारित समयः 3 घंटे 15 मिनट **अधिकतम अंकः 80**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देशः

- **परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।**
- **सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य हैं।**
- **प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।**
- **जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।**
- **प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व उत्तर क्रमांक अवश्य लिखें।**

खण्ड – (अ)

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी पुस्तिका में लिखिए (i-xii)– **[12×1= 12]**

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम के कितने भेद होते हैं?
(अ) तीन (ब) चार (स) दो (द) पाँच

(ii) तुम स्वयं वहाँ चले जाओ। रेखांकित सर्वनाम का भेद बताइए।
(अ) निश्चयवाचक सर्वनाम (ब) संबंधवाचक सर्वनाम
(स) निजवाचक सर्वनाम (द) पुरुषवाचक सर्वनाम

(iii) 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाक्य में प्रयुक्त सर्वनाम है–
(अ) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (ब) निजवाचक सर्वनाम
(स) निश्चयवाचक सर्वनाम (द) पुरुषवाचक सर्वनाम

(iv) कर्म के आधार पर क्रिया के भेद हैं–
(अ) दो (ब) चार (स) छः (द) तीन

(v) वे शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते हैं तथा इसके अर्थ को सीमित करते हैं, उन्हें कहते हैं–
(अ) अव्यय (ब) उपसर्ग (स) क्रियाविशेषण (द) प्रत्यय

(vi) 'सीवन को उधेड़कर देखना' पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है?
(अ) जीवन के छिपे रहस्यों को खोलकर देखना (ब) गुदड़ी को खोलना
(स) बेनकाब करना (द) बेपर्दा करना

(vii) 'दंतुरित मुस्कान' कैसी होती है?
(अ) खिलखिलाकर हँसना (ब) शिशु के दो दाँतों के बीच से आने वाली मुस्कुराहट
(स) बड़े बालक की हँसी (द) ठहाका लगाना

(viii) हालदार साहब मूर्ति के सामने अटेंशन में खड़े हो गए, क्यों?
(अ) मूर्ति की आँखो पर सरकंडे का चश्मा था (ब) मूर्ति के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए।
(स) यह चश्मा किसी बच्चे ने बनाया था (द) कोई और कारण था।

(ix) बुरी आर्थिक स्थिति के अलावा पिताजी के स्वभाव में वह क्या बात थी जो उन्हें बच्चों से अधिक घुलने–मिलने नहीं देती थी?
(अ) महत्त्वाकांक्षाएँ (ब) अहं
(स) शीर्ष पर रहना (द) चिल्लाते रहना

(x) काशी में कौनसी प्राचीन एवं अद्‌भुत परम्परा है।
(अ) संगीत आयोजन की (ब) शहनाई वादन की
(स) बालाजी के प्रति (द) अपने धर्म के प्रति

(xi) एक किलोमीटर के क्षेत्र में देवी–देवताओं का निवास स्थान कहलाता है।
(अ) बोदुम (ब) खेदुम
(स) गंतोक (द) यूमथांग

(xii) भोलानाथ का वास्तविक नाम था–
(अ) शिवपूजन सहाय (ब) बम भोला (स) ताड़केश्वर नाथ (द) भोला भण्डारी

\\172.16.160.245\dtpdata$\PNCF\PNCF_2025-26\BOARD SAMPLE PAPER\RBSE

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए (i-vi) **[6 ×1 = 6]**

(i) प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार अमूर्तभाव तथा क्रिया.....संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।

(ii) ऐसे सर्वनाम जिनका प्रयोग वक्ता या लेखक (स्वयं) अपने लिए करते हैं, वे.....कहलाते हैं।

(iii) जिस वाक्य में क्रिया का प्रभाव या फल केवल कर्त्ता पर ही पड़ता है, उसे.....क्रिया कहते है।

(iv) 'परिणामवाचक विशेषण के.....उपभेद है।

(v) हिन्दी भाषा में मुख्यतः..... प्रकार के उपसर्ग प्रचलित हैं।

(vi) वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अन्त में लगकर नए शब्दों की रचना करते हैं, उन्हें.....प्रत्यय कहते है।

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए– **[6×1=6]**

सभ्यता की वर्तमान स्थिति में एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से वैसा भय तो नहीं रहा जैसा पहले रहा करता था, पर एक जाति को दूसरी जाति से, एक देश को दूसरे देश से, भय के स्थाई कारण प्रतिष्ठित हो गए हैं। सबल और सबल देशों के बीच अर्थ–संघर्ष की, सबल और निर्बल देशों के बीच अर्थ–शोषण की प्रक्रिया अनवरत चल रही है; एक क्षण का विराम नहीं है। इस सार्वभौम वणग्वृति से उसका अनर्थ कभी न होता यदि क्षात्रवृति उसके लक्ष्य से अपना लक्ष्य अलग रखती पर इस युग में दोनों का विलक्षण सहयोग हो गया है। वर्तमान अर्थोन्माद को शासन के भीतर रखने के लिए क्षात्रधर्म के उच्च और पवित्र आदर्श को लेकर क्षात्र संघ की प्रतिष्ठा आवश्यक है।

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है–

(अ) भय (ब) प्रसन्नता (स) आश्चर्य (द) निर्वेद

(ii) एक देश को दूसरे देश से भय के कारण हो गए हैं–

(अ) निर्बल (ब) सबल (स) स्थाई (द) क्षणिक

(iii) सबल और निर्बल देशों के बीच अनवरत चल रही है–

(अ) शोषण की प्रक्रिया (ब) भय जनित प्रक्रिया

(स) अर्थ–जनित प्रक्रिया (द) संघर्ष की प्रक्रिया

(iv) क्षात्रवृति किस वृति से भिन्न है?

(v) उच्च और पवित्र आदर्श के लिए किसकी प्रतिष्ठा आवश्यक है।

(vi) 'सबल' शब्द का विपरीतार्थक शब्द गद्यांश में से छांटकर लिखिए।

4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए– **[6×1= 6]**

तोड़ो तोड़ो तोड़ो
ये पत्थर ये चट्टानें
ये झूठे बंधन टूटें
तो धरती को हम जानें
सुनते हैं मिट्टी में रस है जिससे उगती दूब है।
अपने मन के मैदानों पर व्यापी कैसी ऊब है।
आधे–आधे गाने

(i) उपर्युक्त पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए–

(अ) तोड़ों (ब) जोडो (स) उगाओ (द) उपर्युक्त सभी

(ii) कवि क्या तोड़ने की बात कर रहा है?

(अ) पत्थर (ब) चट्टानें (स) झूठे बन्धन (द) उपर्युक्त सभी

(iii) अपने मन के मैदानों पर क्या व्याप्त है?

(अ) उपजाऊपन (ब) झूठे बन्धन (स) उदासीनता (द) परिश्रम

(iv) कवि पत्थर और चट्टानों को तोड़ने की बात क्यों कहता है?

(v) धरती को हम कब जानेंगे?

(vi) रेखांकित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

\\172.16.160.245\dtpdata$\PNCF\PNCF_2025-26\BOARD SAMPLE PAPER\RBSE

खण्ड -(ब)

निम्नलिखित लघुत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के लिए उत्तर सीमा लगभग 40 शब्द है। [7×2=14]

5. संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है।

6. 'यह दंतुरित मुस्कान' के कविता में 'बाँस और बबूल' किसके प्रतीक है?

7. निपात किसे कहते है?

8. निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग कीजिए–
आस्तीन का साँप होना।

9. 'अरी सरलते ! तेरी हँसी उड़ाऊँ मैं' से कवि क्या कहना चाहता है?

10. लेखिका के मन में हीनता की भावना किस कारण उत्पन्न हो गई थी?

11. कवि जयशंकर प्रसाद को कौनसा सुख नहीं मिला?

खण्ड -(स)

12. **निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए। [4×1=4]**

होश सँभालने के बाद से ही जिन पिताजी से किसी– न किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं.....कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में। केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिल्कुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है? समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए..... स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं ही कर सकता?

(i) लेखिका का बात–बात पर किससे विरोध चलता रहा?

(ii) लेखिका के पिताजी से टक्कर किस–किस बात पर चलती थी?

(iii) हमारे मन के भीतर कौन जड़ जमाए बैठा रहता है?

(iv) स्थितियों का दबाव हमारा रूप बदल सकता है, किन्तु क्या नहीं कर सकता?

अथवा

काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्‌भुत परंपरा है। यह आयोजन पिछले कई बरसों से संकटमोचन मंदिर में होता आया है। यह मंदिर शहर के दक्षिण में लंका पर स्थित है व हनुमान जयंती के अवसर पर यहाँ पाँच दिनों तक शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन– वादन की उत्कृष्ट सभा होती है। इसमें बिस्मिल्ला खाँ अवश्य रहते हैं। अपने महजब के प्रति अत्यधिक समर्पित उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ जी के प्रति अपार है। वे जब भी काशी से बाहर रहते हैं तब विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते हैं, थोड़ी देर ही सही मगर उसी ओर शहनाई का प्याला घुमा लिया जाता है.....।

(i) काशी में प्राचीन एवं अद्‌भुत परम्परा कौनसी है।

(ii) संगीत का आयोजन कहाँ होता आया है?

(iii) हनुमान जयन्ती पर कौनसी सभा होती है?

(iv) बिस्मिल्ला खाँ की काशी विश्वनाथ के प्रति अपार श्रद्धा कैसे प्रतीत होती है?

13. **निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए- [4×1 = 4]**

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर–घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर–पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में

\\172.16.160.245\dtpdata$\PNCF\PNCF_2025-26\BOARD SAMPLE PAPER\RBSE

मंद–गंध–पुष्प–माल,
पाट–पाट शोभा– श्री
पट नहीं रही है।

(i) कवि ने 'फागुन की आभा' की किस विशेषता का वर्णन किया है?
(ii) कवि की आँखें कहाँ से तथा क्यों नहीं हट रही हैं?
(iii) 'पाट–पाट शोभा– श्री पट नहीं रही है' का आशय स्पष्ट कीजिए।
(iv) फागुन की मादकता का मानव– मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

अथवा

मुख्य गायक के चट्टान जैसे भारी स्वर का साथ देती
वह आवाज सुंदर कमजोर काँपती हुई थी
वह मुख्य गायक का छोटा भाई है
या उसका शिष्य
या पैदल चलकर सीखने आने वाला दूर का कोई रिश्तेदार
मुख्य गायक की गरज में
वह अपनी गूँज मिलाता आया है प्राचीन काल से

(i) संगतकार का मुख्य गायक के साथ क्या सम्बन्ध है?
(ii) 'संगतकार की आवाज की विशेषताएँ क्या है?
(iii) 'मुख्य गायक एवं संगतकार की आवाज का श्रोताओं पर क्या प्रभाव पड़ता है।
(iv) संगतकार प्राचीन समय से क्या करते आ रहे है?

14. लेनिन को रूस का भाग्यविधाता क्यों कहा गया है? उसके किस गुण की चर्चा लेखक ने की है। **[3]**

अथवा

फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

15. 'तप्त धरा, जल से फिर शीतल कर दो– बादल गरजो!' कवि निराला ने तप्त धरा को शीतल करने की बात क्यों कही है। **[3]**

अथवा

"नायक की सफलता में अनेक लोगों की भूमिका होती है" 'संगतकार' पाठ के आधार पर इस कथन के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार लिखिए।

खण्ड – (द)

16. 'रामवृक्ष बेनीपुरी' का जीवन व कृत्तित्व परिचय संक्षेप में लिखिए। **[4]**

अथवा

'तुलसीदास' का जीवन व कृत्तित्व परिचय संक्षेप मे लिखिए।

17. प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है। **[4]**

अथवा

"कृति और सामान्य लेखन में लेखक ने क्या अंतर बतलाया है?

18. **निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 300-350 शब्दों में सारगर्भित निबन्ध लिखिए।** **[6]**

(अ) शिक्षित नारी की समाज निर्माण में भूमिका
(i) भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान (ii) नारी की वास्तविक स्थिति
(iii) नारी शिक्षा का महत्व (iv) शिक्षित नारी की भूमिका
(v) शिक्षित नारी का आदर्श स्वरूप

(ब) शिक्षा में खेलकूद का महत्व
(i) खेलकूद का महत्व (ii) स्वास्थ्य और खेल
(iii) शिक्षा और खेलकूद (iv) खेलकूद के अन्य लाभ
(v) उपसंहार

(स) मेरा प्रिय कवि
(i) मेरा प्रिय कवि (ii) कवि का परिचय
(iii) प्रिय लगने के कारण (iv) उपसंहार

\\172.16.160.245\dtpdata$\PNCF\PNCF_2025-26\BOARD SAMPLE PAPER\RBSE

(द) समाचार पत्रों का महत्व

(i) समाचार पत्रों का महत्व (ii) समाचार पत्रों का वर्तमान स्वरूप

(iii) समाचार पत्रों का दायित्व (iv) उपसंहार

19. किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार–पत्र के संपादक को पत्र लिखकर चुनाव के दिनों में कार्यकर्ताओं द्वारा घरों, विद्यालयों और मार्गदर्शक चित्रों आदि पर बेतहाशा पोस्टर लगाने के कारण इससे लोगों को होने वाली असुविधा की ओर ध्यान आकृष्ट कीजिए। **[4]**

अथवा

पढ़ाई छोड़कर घर बैठे छोटे भाई को समझाते हुये पत्र लिखिए कि पढ़ना क्यों आवश्यक है। पत्र ऐसा हो कि उसमें नई उमंग का संचार हो सके।

20. निम्नलिखित अनुच्छेद का संक्षिप्तिकरण कीजिए–

भारतीय नारी न्याय, बलिदान, साहस, शक्ति तथा सेवा की प्रतिमूर्ति है। जीवन के सुख–दुःख में छाया की भाँति पुरूष का साथ देने के कारण वह अर्द्धांगिनी, धन की व्यवस्थापिका होने के कारण वह लक्ष्मी, श्लाघनीय गुणों के कारण वह देवी कही जाती है। स्वार्थ और भोग–लिप्सा को तिलांजलि देकर भारतीय नारी ने आत्म–बलिदान द्वारा समय–समय पर ऐसी ज्योति प्रज्वलित की है कि उसके पुनीत प्रकाश में पुरूष ने अपना मार्ग ढूँढ़ा है। उसी शक्ति के सामने यमराज को हारना पड़ा है। सती सावित्री, वीरांगना लक्ष्मीबाई, तपस्विनी, उर्मिला की दिव्य झांकियाँ प्रेरणा के स्त्रोत हैं और पुरूष की चेतना और जागरण का संदेश देती हैं। नारी का सम्मान करके ही पुरूष का जीवन कुसुम सुवासित होता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। **[4]**

अथवा

निम्नलिखित पंक्ति का पल्लवन (वृद्धिकरण) कीजिए–

"सेवा ही वह सीमेन्ट है जो दम्पति को जीवन–पर्यन्त स्नेह और साहचर्य से जोड़े रख सकता है।"

\\172.16.160.245\dtpdata$\PNCF\PNCF_2025-26\BOARD SAMPLE PAPER\RBSE